कवि अशोक चक्रधर : अनेक विधाओं में धुरंधर

प्रो. अज़हर हाशमी
लेखक, कवि और समालोचक हैं

मेरे मत में कवि अशोक चक्रधर के अक्षरों में 'विजन' और शब्दों में 'वजन' है. 'विजन' ने अशोक चक्रधर को विचार-वैभव दिया है तो 'वजन' ने संप्रेषण-सामर्थ्य. अशोक चक्रधर के अंदर बैठे हुए रचनाकार के रक्त में गर्माहट/मन में सुगबुगाहट/ आत्मा में अकुलाहट/ किंतु होंठों पर मुस्कुराहट है. एक वाक्य में यह कि मुस्कुराहट के साथ सुगबुगाहट का 'समन्वय' साहित्यकार अशोक चक्रधर की रचनाधर्मिता है. सुगबुगाहट दरअसल अशोक चक्रधर की 'क्रिएटिविटी' है तो मुस्कुराहट 'पाजिटिविटी'. रचनाओं के पड़ाव पर अशोक चक्रधर कभी 'बूढ़े बच्चे' लगते हैं तो कभी 'भोले-भाले'. अशोक चक्रधर ने नटकथा से पटकथा तक लेखन में हाथ आजमाए हैं.

मेरे मत में कवि अशोक चक्रधर के अक्षरों में 'विजन' और शब्दों में 'वजन' है. 'विजन' ने अशोक चक्रधर को विचार-वैभव दिया है तो 'वजन' ने संप्रेषण-सामर्थ्य. मेरा यह भी मत है कि अशोक चक्रधर के अंदर बैठे हुए रचनाकार के रक्त में गर्माहट/मन में सुगबुगाहट/ आत्मा में अकुलाहट/ किंतु होंठों पर मुस्कुराहट है. एक वाक्य में यह कि मुस्कुराहट के साथ सुगबुगाहट का 'समन्वय' साहित्यकार अशोक चक्रधर की रचनाधर्मिता है. सुगबुगाहट दरअसल अशोक चक्रधर की 'क्रिएटिविटी' है तो मुस्कुराहट 'पाजिटिविटी'. सुगबुगाहट की सड़क से मुस्कुराहट की मंजिल तक अशोक चक्रधर में निहित रचनाकार जो यात्रा करता है पड़ाव के रूप में कई कृतियाँ दे जाता है. रचनाओं के पड़ाव पर अशोक चक्रधर कभी 'बूढ़े बच्चे' लगते हैं तो कभी 'भोले-भाले', कभी 'खिड़कियां' खोलते हुए दिखाई देते हैं तो कभी 'तमाशा' करते हुए नजर आते हैं, कभी 'सोची-समझी' पद्धति से 'चुटपुटकले' सुनाते हैं तो कभी 'चुनी-चुनाई' लाकर कह देते हैं 'सो तो है'. मेरे मौलिक मत में अशोक चक्रधर ने नटकथा से पटकथा तक लेखन में हाथ आजमाए हैं. मेरे इस मत के प्रमाण है- उनके नाटक 'रंग जमा लो', 'बिटिया की सिसकी', 'जब रहा न कोई चारा' तो दूसरी ओर पटकथा में टेलीफिल्म, वृत्तचित्र, टीवी सीरियल और फीचर फिल्म व दूरदर्शन में लेखन, निर्देशन के साथ-साथ अशोक चक्रधर ने 'रंगमंच' पर अभिनय किया है तो 'काव्यमंच' से कविताएं पढ़ी हैं. समीक्षा से लेकर अनुवाद तक और बाल साहित्य से लेकर प्रौढ़ एवं नवसाक्षर साहित्य तक

प्रसंगवश : कवि और कवि सम्मेलन

अशोक चक्रधर ने प्रसिद्धि का परचम लहराया है. इसीलिए मैं कहता हूं कि कवि अशोक चक्रधर यानी अनेक विधाओं में धुरंधर. यह कहने-लिखने का मेरा उद्देश्य अशोक चक्रधर के व्यक्तित्व और कृतित्व का विश्लेषण करना नहीं है अपितु उस 'प्लेटफॉर्म' का निर्माण करना है जहाँ आकर उनसे (अशोक चक्रधर से) जुड़े मेरे संस्मरणों की 'ट्रेन' रुक सके और पाठक-रूपी 'यात्री' अपनी वांछित 'सामग्री' ले सकें. तो जहाँ तक अशोक चक्रधर से संबंधित मेरे संस्मरणों की बात है उसकी तो एक श्रृंखला बन सकती है क्योंकि जावरा (संस्कृति संगम कवि सम्मेलन) और रतलाम के कार्यक्रमों में मेरे संचालन में उन्होंने पांच-छह बार काव्यपाठ किया है तो उनके (अशोक चक्रधर के) संचालन में मैंने एक बार काव्य-पाठ किया है तो सी.पी.सी दूरदर्शन दिल्ली द्वारा टेलीकास्ट सन् 1990 के दशक के कवि सम्मेलनों में एक से अधिक बार अशोक चक्रधर और मैं साथ-साथ काव्य पाठ कर चुके हैं. उल्लेखनीय है कि सन् 1990 के दशक के उस दौर में सी.पी.सी. दूरदर्शन दिल्ली के कवि सम्मेलन (जिसके कार्यक्रम प्रोड्यूसर तब श्रीमती वेद एम.राव हुआ करती थीं) अन्तरराष्ट्रीय प्रसारण की गुणवत्ता को ध्यान में रखकर रिकॉर्ड किए जाते थे और उसके पूर्व रिहर्सल चलती थी, तब सीपीसी दूरदर्शन तीन दिन पहले ही कवियों को दिल्ली रिकॉर्डिंग हेतु आमंत्रित कर लेता था. 'समुचित सम्मान' भी कवियों को मिलता था और 'मानदेय' भी. इन कवि सम्मेलनों का प्रभावी संचालन तब प्रसिद्ध रंग कवि गोविंद व्यास करते थे. गोविंद व्यास के संचालन का भी दूरदर्शन के दर्शकों में आकर्षण रहता था अस्तु! अब मैं लौटकर आता हूं पुन: उसी बात पर कि अशोक चक्रधर और मेरे संस्मरणों की तो एक श्रृंखला बन सकती है क्योंकि रतलाम से रामपुर तक और इंदौर से दिल्ली तक हमने कई बार मंच साझा किए हैं. 23 जनवरी सन् 2010 को इंदौर के 'झंडा ऊंचा रहे हमारा' कवि सम्मेलन में (जिसका संचालन प्रो. राजीव शर्मा ने किया था और संयोजक स्तंभकार संजय पटेल थे) जिसमें शैलेष लोढ़ा (तारक मेहता का उल्टा चश्मा 'फेम') भी थे और अशोक चक्रधर तथा बालकवि बैरागी भी, हमने साथ-साथ काव्यपाठ किया था. उस 23 जनवरी को चूंकि सुभाष जयंती भी थी और वसंत पंचमी भी, इसलिए मैंने नेताजी सुभाष के संदर्भ में मुक्तक (अपना कफ़न तुम्हें दे दूंगा) सुनाया था और वसंत-पंचमी के परिप्रेक्ष्य में 'तो समझो वसंत है' गजल सुनाई थी. मुक्तक और गजल दोनों ही (संकोच के साथ लिख रहा हूं चूँकि आत्मप्रशंसा अच्छी बात नहीं लेकिन इसके बिना संस्मरण का संदर्भ ही नहीं बनेगा) श्रोताओं ने खूब सराहे थे. मेरे बाद काव्यपाठ के लिए अशोक चक्रधर को बुलाया गया था तब उन्होंने फौरन ही मेरी गजल (तो समझो वसंत है) पर 'पैरोडी' तैयार करके सुना दी थी. इसका प्रभाव यह हुआ कि श्रोता 'प्रसन्नचित्त' थे, अशोक चक्रधर 'उमंग चित्त' और मैं 'चारों खाने चित्त'. लेकिन इस 'चारों खाने चित्त' होने से 'माईनस माईनस प्लस' होने से मेरा 'दोहरा प्रभाव' हो गया था यानी मेरी गजल ने झाँकी तो जमा ही दी थी अशोक चक्रधर ने तुरंत पैरोडी से अपना भी सिक्का चला दिया और मेरा प्रभाव भी बढ़ा दिया. और अब वह संस्मरण जिसे सबसे पहले होना था. चित्र से संस्मरण कम शब्दों में आ जाएगा. आलेख में प्रकाशित यह चित्र 1 जनवरी सन् 1981 का रतलाम के नगर निगम सभागृह का है. इसमें बीच में अशोक चक्रधर (मालाएं पहने हुए) हैं, दायीं ओर कवि प्रो. सरोज कुमार (माला पहने हुए) तथा बायीं ओर (सूट में) मैं हूं जो 'सहयोग' संस्था के उद्घाटन के अवसर पर अशोक चक्रधर का स्वागत कर रहा हूं. इस संस्था का गठन धीरज शर्मा/अशोक अग्रवाल/अशोक चोपड़ा तथा नंदलाल व्यास (अब नहीं रहे) ने किया था. चित्र में देखिए. अपने गले में पड़े 'मोटे हार' पर अशोक चक्रधर ने 'मोटी माला, वाह रे लाला' कविता तुरंत सुना दी थी.

कविताएं

समय की दरकार

संदीप तोमर

कोई नहीं जानता
कि कब बन्द करेगी
पृथ्वी घूमना, थम जाएगी, जम जाएगी

कब सूरज प्रकाशित होना
बन्द कर देगा और
घूमने लगेगा पृथ्वी के गिर्द

कि
मिलेंगे हम
अंतरिक्ष की अन्य पृथ्वियों से
नए रिश्तों के लिए

हमारा स्थिर हो जाना भी
हो जाएगा नियति
जैसे मृत्यु सत्य है

हाँ, इतना तय है कि
हर सत्य को सत्य होने में
लम्बे समय की दरकार है.

स्कूल नाव से जाना हो तो

संजीवनी कान्त

बारिश ज्यादा होने पर
स्कूल न जाना,
ठंडा मौसम होने से
चादर ओढ़ कर,खिडकी में बैठकर
गरम गरम ज्वार की धानी खाना
रास्ते पर बहता बारिश का पानी देखना
मटमैला, चाय जैसा
चाय की नदी

उस नदी में
रफ कापी के पन्नों से बनाई नाव डालना
और नाव को गली के मोड़ तक
जाते हुए देखना
और सोचना कि
कभी स्कूल नाव से जाना हो तो

प्रेम और प्रतीक

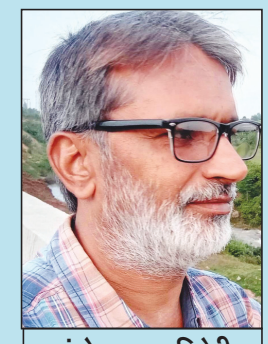

संतोष कुमार द्विवेदी

मेरी पत्नी मेरे कपड़े नही धोती
इस्तरी नही करती
जूतों में पॉलिस भी नही करती
मेरी घड़ी, रूमाल, चश्मे और
मोबाइल से भी उसका कोई वास्ता नही

नहीं करती वह ,
वह सब जो उसकी मां उसके पिता के लिए
और उसकी मां की मां अपने पति
यानि कि उसकी नानी उसके नाना के लिए करती थी

लेकिन मेरी पत्नी मुझे उसी तरह प्रेम करती है
जिस तरह दुनिया की सबसे पहली
स्त्री ने किया था
अपने पति को प्रेम

प्रतीकों के बदल जाने से
प्रेम नही बदलता .

बचपन का पन्द्रह अगस्त

डॉ. श्रीमती कमल चतुर्वेदी

आज पन्द्रह अगस्त के मायने हमारे लिये कुछ भी हों परन्तु बचपन में पन्द्रह अगस्त हमारे लिये कौतुक और उत्साह का विषय हुआ करता था . उल्लास, और हर्ष के इस महापर्व की हमें जुलाई से ही प्रतीक्षा रहती थी . उस समय प्रभातफेरी, ध्वजारोहण, भाषण, निबन्ध आदि के साथ ही तरह-तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुआ करते थे किन्तु हमारे लिये सबसे अधिक आकर्षण उस दिन बाँटे जाने वाले बूँदी के लड्डुओं के प्रति हुआ करता था . उस दिन स्कूल से लड्डू लेकर लौटते हुए हम स्वयं को किसी सम्राट से कम ना समझते थे . वे दिन आज हमारे लिये खो गए हैं, तो आइये उन दिनों की भोली भाली मासूम स्मृतियों में रमते हुए इस यादघर में उन दिनों को एक बार फिर से भरपूर जी लेते हैं . इटारसी नगर की कस्तूरबा कन्या प्राथमिक शाला, गाँधी-नगर इटारसी चौथी कक्षा की छात्रा मैं ...शांति उपाध्याय बहन जी ने अपना पुराना चश्मा अपनी सफेद साड़ी से पोंछा, आँखों पर चढ़ाया, भौहों को सिकोड़ा और सूचना सी सुनाई .. 'ध्यान से सुनो इधर, ऐ शशिबाला, किधर ध्यान है .. इधर सुनो...हाँ तो मैं क्या कह रही थी .... जिन लड़कियों को गाँधी ग्राउंड तक जाने वाली झाँकी के लिये पात्र बनना है, गीत गाना है, भाषण, नाटक आदि में भाग लेना है वे अपने नाम कमल के पास लिखा दो . देशभक्ति के गीत गाना है.....और हाँ इस बार बिस्कुट नहीं बूँदी के लड्डू बटेंगें ...आई समझ.....कमल सुन रही है या बातों में लगी है....20 जुलाई तक नाम आ जाने चाहिये... आई समझ.... हम सब समवेत स्वर में चिल्लाते..... जी बहन जी, आ गई समझ . मेरे पास बैठी कान्ता का चेहरा लड्डू का नाम सुनते ही पेड़े जैसा होने लगा था...क्यों कमल कितने लड्डू मिलेंगें- और तू क्या बनेगी...मेरे द्वारा 'रानी लक्ष्मीबाई' कहने पर चन्द्रकला ने कहा था- तू और झाँसी की रानी... छिपकली से तो डरती है.... सारी लड़कियाँ हँस पड़ी थीं चन्द्रकला की बात सुनकर. और मैं झेंपकर रह गई थी .

एक अगस्त को प्रधानाध्यापिका ने सबको मैदान पर बुलाया था . बड़ी बहन जी तारा बाई तिवारी उस दिन गुलाबी साड़ी पहनकर, गुलाब का फूल हाथ में लिये आईं और उन्होंने कहना शुरू किया - 'बच्चों हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हम उल्लास से पन्द्रह अगस्त मनाएंगें.... प्रिय बच्चों.. ये जो गुलाब मेरे हाथ में है, ऐसे ही तुम लोग भी एक एक गुलाब लेकर आओगे उस दिन... जिनके घर न हों कोई बात नहीं.... जो ला सकते हैं वे जरूर लेकर आएँ हम झंडा-वंदन करेंगे ... गुलाबों से सज्जा करेंगें.... सभी लड़कियाँ सुबह सात बजे स्कूल ड्रेस में साफ सुथरी बनकर आएंगी... गंदेपन से आने वाली लड़कियों को सजा मिलेगी और साफ सुथरी लड़कियों को इनाम मिलेगा.... और कोई भी लड़की अनुपस्थित नहीं हो इस दिन....समझ लेना तुम लोग ... ' आगे तुम लोगों को शांति बहन जी समझाएंगी . कहकर बड़ी बहन जी उनके कक्ष में चली गईं थी . शांति उपाध्याय बहन जी ने चश्मा सफेद साड़ी से पोंछा फिर लगाया और जोर से चिल्लाकर कहा - सुनो लड़कियों जो किसी भी कार्यक्रम में भाग लेगा उसे एक पेंसिल, एक कॉपी और दो लड्डू अलग से मिलेंगें . बाकी सबको दो दो लड्डू मिलेंगें.. और हाँ सब लाईन में खड़ी रहेंगी... आई समझ . घर आते ही मैंने अपनी माँ से कहा- माताजी सब काम छोड़ो हमें महारानी लक्ष्मीबाई बनना है और सपेरा का नाच करना है . मैं नागिन बनी हूँ और मोहिनी सपेरा बनी है- माताजी का माथा ठनका- ये और क्या आफत आ गई.....खिड़की से झांका तो सरोज के चाचा उसे समझा रहे थे.....भगतसिंह मत बनो.....कपड़े नहीं हैं भगतसिंह के . महात्मा गांधी बनो...सरल है - एक धोती, एक लाठी और एक चश्मा बस... सरोज ने रोते-रोते पूछा था- गांधी जी बनने पर भी चार लड्डू, एक पैन और एक कॉपी तो मिलेगी ना.....

स्कूल में तैयारियाँ शुरू हो गईं थीं - तभी पता चला 'भारत-माता' बनने वाली सुधा बीमार पड़ गई, नेहरू बनने वाली कांता को उसके मामा होशंगाबाद ले गए, विवेकानंद बन रही प्रेमलता अमरूद के पेड़ पर से गिर पड़ी.... अमरूद तोड़ने चढ़ी थी.. वो भी नहीं आ पाएगी . बड़ी बहन जी का पारा गरम हो गया था..... वे बहन जी लोगों को डांट रही थीं - लापरवाही की हद है.... अरे क्या होगा कैसे होगा... मुख्य अतिथि क्या सोचेंगे...तभी सरला ने धीरे से पूछा.... 'लड्डू कहाँ बन रहे हैं, मिलेंगे कि नहीं...' 'चुप रह पेटू कहीं की, बड़ी बहनजी इधर ही देख रही हैं और तुझे लड्डू की पड़ी है..' मैंने धीरे से कहा था . और पन्द्रह अगस्त आ गया.... सुबह जल्दी उठ कर हम स्कूल पहुँचे . मुझे झांसी की रानी बनाया गया, नई-नई लड़कियां दूसरे पात्र बने . हम सब हाथ में तिरंगा लेकर निकले.... एक साथ सारे स्कूल के बच्चे, एक बीत सारे जहाँ से अच्छा.....हिंदुस्तान हमारा... बीच में झांकी.... हमारे मोहल्ले के एक लड़के ने मुझे देखकर कहा... अरे झांसी की रानी अरे कमल तू बनी है- तुझे देखकर कौन कहेगा कि तू छिपकली से डरती है... हम सब गाँधी-ग्राउन्ड पहुँचते वहाँ पर झंडा वंदन होता.... मुख्य अतिथि झंडा फहराते, भाषण देते....बच्चों तुम्हें क्रांतिकारियों के पद चिन्हों पर चलना है . सहसा बहुत तेज बारिश होने लगी तो स्टेज से कहा गया- सब अपने-अपने स्कूल पहुँचें.... यहाँ अब बारिश के कारण सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं होंगें . स्कूल में सबको बरामदे में बिठाया जाता - वहीं थोड़ी सी जगह में रस्सी बाँधकर पर्दा लगा दिया जाता और सांस्कृतिक कार्यक्रम होने लगते .

वहीं हमारा सपेरा डाँस हुआ तो मोहनी की पगड़ी ही गिर पड़ी वह वहाँ से भाग गई.... अब मैं अकेली नागिन क्या करती.... बीन बंद कर दी गई....घोषणा हुई अकेली नागिन सपेरे को खोजने गई है .... . चलो कमल अब मत नाचो, जाओ अंदर चलो... मैं दौड़ कर गई तो मेरा पैर भारी भरकम लहंगे में उलझ गया दोनों घुटनों में लग गई, कोहनियाँ छिल गईं थीं . आखिर वो घड़ी भी आ गई- यानि लड्डू बँटने लगे . प्यारे प्यारे गोल-गोल बूँदी के आठ लड्डू, दो पेंसिल, दो कापी मुझे मिले तो मैं अपने सारे दुख भूल गई थी . मैंने दौड़कर लड्डू लिए तो सबने ताली बजा दी थीं . आज मैं एक अवकाश प्राप्त प्रिंसीपल हूँ.....कई कॉलेजों में पढ़ाया भी है, प्राचार्य भी रही हूँ परंतु जीवन की इन तमाम आपाधापी के बीच आज भी जब मैं बचपन को याद करती हूँ तो पन्द्रह अगस्त मनाने जा रहे बच्चों की भीड़ में उस 'कमल' को तलाश ही लेती हूँ - और फिर मुझे बशीर बद्र का यह शेर याद आ जाता है-

'उड़ने दो परिंदों को अभी शोख़ हवा में, फिर लौटकर बचपन के जमाने नहीं आते .'

ख़त्म होती मानवीयता के प्रति चिंता है वांग छी की कहानियों में

रामकुमार भाम्भू

वर्तमान में सार्थक और सक्रिय लिखने वालों में अग्रणी नाम कथाकार मनीष वैद्य जी का आता है. इनकी लेखनी से निकली कहानियां लगातार विभिन्न लोकप्रिय पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है. फुगाटी का जूता और टुकड़े टुकड़े धूप काफी चर्चित कहानी संग्रह रहे, जिन्हें पाठकों का भरपूर प्यार मिला.

हाल ही में मनीष वैद्य जी का नया कहानी संग्रह आया वांग छी. यह संग्रह भी पाठकों को अपनी तरफ आकर्षित कर रहा है. इस संग्रह में शामिल लगभग सभी कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से पाठकों तक पहुंच चुकी है और अब संग्रह के रूप में दुबारा पढ़ने में भी कहानियां वही आनन्द और संतुष्टि का अनुभव कराती है जो प्रथम बार पढ़ते समय प्राप्त हुआ.

इस संग्रह में कुल 16 कहानियां शामिल है. मनीष जी के लेखन में विशेष बात यह है कि वे जड़ों को नहीं भूलते. वे संदेश देते हैं कि जड़ों से कटकर कोई जिन्दा नहीं रह सकता, केवल जिन्दा दिखाई देता है.उनकी कहानियों में गांव सजीव नजर आता है. इस संग्रह की पहली कहानी खिरनी इसका सशक्त उदाहरण है. बदलते गांव और खोते प्रेम का ताना-बाना पाठक को अपने साथ बहा ले जाता है. उदात्त प्रेम का उत्कृष्ट उदाहरण यह कहानी है.

गांव के बदलते स्वरूप ने सबसे यादा किसानी और परम्परागत कुटीर उद्योगों को प्रभावित किया है. मनीष वैद्य जी की कहानियां का मूल संदेश भी यही होता है कि विकास किस तरह बहुत कुछ अपने में समेट लेता है और पीछे बहुत से लोगों इस तरह मझधार में छोड़ जाता है कि उन्हें कोई किनारा नजर नहीं आता. इस नजरिए से देखें तो संग्रह की कहानी एचएमटी 3511 जहां किसान के सपने की भ्रूणहत्या का दारूण चित्रण है वहीं कन्धे पर घंटाघर बदलती तकनीक

पुस्तक

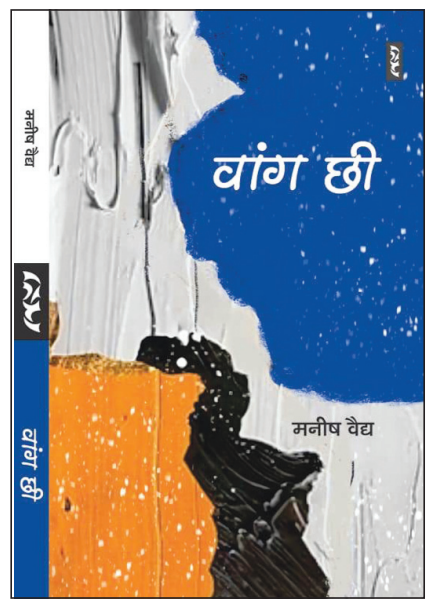

के साथ वर्षों की मेहनत और ईमानदारी के बेनामी होने की झकझोर कर देने वाली दास्तां है. अगन मानुष एक लुहार का दु:ख है जो अपने सामने अपनी कला का अंत होते देखना द्रवित करता है.

बाजारवाद के दौर में लुप्त होती मानवीयता के प्रति चिंता मनीष वैद्य जी की कहानियों में उबर कर सामने आती है. पहले जोड़ , फिर घटाव, फिर जोड़... कहानी इसी बाजारवाद की चपेट में आए एक शख्स की कहानी है जो अपना सबकुछ लुटा चुका है. चुहेदानी रफी और नूरे के समय के साथ न बदलने का दर्द इन शब्दों में झलकता है - हम सब गुनहगार है नूरे... हम सब... वे छोटे और मरियल चूहे हम ही है. हम ही इस अंधी चूहा दौड़ में शामिल है और यह दुनिया एक चूहेदानी.

सभी कहानियां ऐसी है जो पाठक को गहरे से प्रभावित करती है. पाठक इनके पात्रों से इस कदर जुड़ जाता है कि पात्रों के दु:ख सुख स्वयं के लगने लग जाते हैं. भूली भटियारिन का कुआं कहानी की भूली हो या जुगलबंदी का जुम्मा, ऐसा लगता है हमारे आसपास यहीं कहीं मौजूद है.

मनीष वैद्य जी की कहानियों में किस्सागोई का स्तर उच होता है. एक साधारण सी घटना को अपनी किस्सागोई से कहानी के रूप में शिखर पर ले जाते हैं. शीर्षक कहानी वांग छी एक चीनी सैनिक के भटककर भारत आने की घटना से शुरू होकर पाठक को विस्मित करती हुई अपने मुकाम पर पहुंचती है. भूली भटियारिन का कुँआ में भी किस्सागोई कमाल की है. एक तरफा प्यार में मरना और प्रेमी के इंतज़ार में कुछ ऐसा कर जाना कि जमाने का सदियों तक भला करता रहे, दोनों में काफी फर्क है. भूली भटियारिन का कुँआ आज भी प्यास बुझा रहा है और किसी को प्रेमी के इंतज़ार का सम्बल प्रदान कर रहा है. इस गाथा का अंत नहीं कहानी भी किस्सागोई का उत्कृष्ट नमूना है. वर्तमान राजनीति भी बाहुबलियों की मनमर्जी के अधीन है जो राजशाही या यूं कहें कि तानाशाही की शिकार है. बुढ़िया ने रेशमा नट की कहानी के माध्यम से सत्ता की मौकापरस्ती की पोल खोली है. आखिर में बुढ़े का यह कहना कि न्याय किसी चिड़िया का नाम है, एक करारी चोट करता है. हर गांव गली में, हमारे आसपास ऐसा बहुत कुछ हम देखते हैं जिनके पीछे कई कहानियां छुपी होती है. ऐसा ही कथानक इस कहानी का है जो आधारित है एक लोक आस्था और सचाई पर. देशज शब्दों के प्रयोग और भावों को शब्दों में ढालने का हुनर इस कहानी को लाजवाब बना देता है.

वांग छी (कहानी संग्रह)
मनीष वैद्य
सेतु प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य -275 रुपए
प्रकाशन वर्ष-2024

कहानी

प्लास्टिक

डॉ वन्दना अग्निहोत्री

आज मौसम बड़ा सुहाना है, मैडम के क्लासरूम से जाने के बाद अर्पिता ने कहा, चलो आज पार्क में बैठकर ही लंच लिया जाये. बगीचे में हरी-हरी घास पर खाना खायेगे. अरे यार, बारिश हो गई तो समेट कर अंदर भागना पड़ेगा शिवानी बोली. ठंडी ठंडी हवा का आनंद लेने के लिए चारो सहेलियाँ पार्क में लंच लेने चल पड़ी. पार्क में पहुंचकर देखा बहुत सारी लड़कियाँ आज पार्क में खाना खा रही थीं. उन्होंने नल पर जाकर अच्छी तरह हाँथ धोये और एक पेड़ के नीचे आकर बैठ गई, सबने लंच- बाक्स खोले अपना-अपना खाना एक दूसरे से शेयर किया और खाना खाने लगीं. खाने और बातों में मशगुल थी कि हवा का एक तेज़ झोंका आया और साथ में बहुत-सा कचरा भी उड़ा लाया, अर्पिता के लंच बॉक्स पर एक प्लास्टिक की थैली कहीं से आकर गिर गई. अर्पिता का मन खराब हो गया, बोली इस थैली को भी खाने पर ही गिरना था, अभी तो खाना शुरू किया था अब पूरा खाना फेंकना पड़ेगा, उसने टिफ़िन एक ओर खिसका दिया.अंकिता ने उसके मनोभावों को समझते हुए कहा, अरे, क्यों चिन्ता कर रही है, हम सबके पास बहुत सारा खाना है. तुम इससे खाओ.

अर्पिता ने खाना तो खाया परन्तु उसे बहुत गुस्सा आ रहा था बोली- कितनी गलत बात है, लोग प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग कर उसे चाहे जहाँ फेंक देते हैं, जबकि उसे डस्टबीन में डालना चाहिए. महक ने स्वर मिलाया हाँ यार, लोग काम हो जाने के बाद इन थैलियों को कहीं भी डाल देते हैं, इससे सारा पर्यावरण दूषित हो रहा है. प्लास्टिक नष्ट भी नहीं होता ये एक बहुत बड़ी समस्या है. शिवानी ने कहा, दूसरों की क्या बात करें, हम भी तो प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग करते है, बस अन्तर है कि हम प्लास्टिक के सामान का उपयोग कर उसे डस्टबीन में डालते हैं. प्लास्टिक एक तो नष्ट नहीं होता, दूसरा भूमि की उर्वरता को भी कम करता है, इसके विषैले तत्व मिट्टी में मिल जाते हैं, पानी भी प्रदूषित होता है, अगर ऐसा ही चलता रहा तो धरती की बंजरता बढ़ती जायेगी, पानी प्रदूषित होता जायेगा और पर्यावरण में प्रदूषण बढ़ता रहेगा. अर्पिता ने निर्णायात्मक स्वर में कहा, बातें करने से कुछ नहीं होना हमें कुछ करना चाहिए, पर क्या करें, सरकार इतनी कोशिश कर रही है,प्रतिबन्ध लगा रही है, विज्ञापन आ रहे है पर लोग है कि मानते ही नहीं. प्रदूषण बढ़ता जा रहा है. हम भी कुछ दिनों में ये सब भूल जायेंगे.

चारों सहेलियाँ सोचने लगी क्या किया जाए ? उन्होंने निर्णय किया हम कक्षाओं में जाकर पर्यावरण संरक्षण के लिए सबको जागरूक करेंगे, हर क्लास से चार-चार लड़ ?कियों को लेकर फ़री पीरियड में स्कूल परिसर की सफाई करेंगे और स्कूल को प्लास्टिक से मुक्त करेंगे. लेकिन हमारे कहने से कोई इस बात को नहीं मानेगा प्राचार्य मैडम को हम यह बात बताते है.

महक ने सुझाव दिया. चारो प्राचार्य मैडम के चेंबर की ओर चली, मन ही मन डर रही थीं, पता नहीं मैडम क्या कहेंगी, डाँट ही न लगादे ये क्या नई बात लेकर आई हो, अन्दर जाकर मैडम को अपनी योजना के बारे में बताया तो मैडम ने उन चारों को एक बार बहुत गहरी दृष्टि से देखा, चारों घबराई पर दूसरे ही क्षण मैडम मुस्कुराकर बोली, तुम लोग बड़ी हो गई हो और समझदार भी. तुम एक सराहनीय प्रयास करना चाहती हो मैं शिक्षकों के साथ एक समिति बना देती हूँ, तुम उनके दिशा निर्देश में प्लास्टिक से बचाव के कार्यों को अंजाम दो. 'धन्यवाद मैडम' कहकर वे बाहर आई, उनके चेहरे खुशी से खिल उठे थे. महक ने कहा 'अर्पिता आज प्लास्टिक की थैली से फायदा ही हुआ . हमने पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए कुछ ठोस काम करने की योजना बनाई.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी